आपूर्यमाणाम्=नित्य परिपूर्ण; **अचलप्रतिष्ठम्**=अचल प्रतिष्ठा वाले; **समुद्रम्**=सागर में; **आपः**=जल; **प्रविशन्ति**=समा जाता है; **यद्वत्**=जिस प्रकार; **तद्वत्**=उसी भाँति; **कामाः**=कामनायें; **यम्**=जिसमें; **प्रविशन्ति**=समा जाती हैं; **सर्वे**=सदा; **सः**=वह; **शान्तिम्**=शान्ति; **आप्नोति**=प्राप्त करता है; **न**=नहीं; **कामकामी**=भोग चाहने वाला।

अनुवाद

जिस प्रकार नदियों के जल से नित्य भरते रहने पर भी समुद्र अचल रहता है, उसी भाँति जो कामनाओं के अविच्छिन्न प्रवाह से विचलित नहीं होता वही पुरुष शान्ति पा सकता है, कामनाओं की पूर्ति के लिये चेष्टा करने वाला नहीं।।७०।।

तात्पर्य

जल से सदा भरा होने पर भी विशाल सागर नित्य-निरन्तर (विशेषतः वर्षा ऋतु में) अधिकाधिक जल से संकुलित होता रहता है। तथापि उसकी अचल प्रतिष्ठा भंग नहीं होती, वह तट का उल्लंघन नहीं करता। कृष्णभावनाभावित भक्त के सम्बन्ध में भी यही सत्य है। जब तक प्राकृत देह विद्यमान है, तब तक इन्द्रियतृप्ति के लिए शरीर की माँगे बनी रहेंगी। परन्तु भक्त ऐसे मनोरथों से अशान्त नहीं होता, क्योंकि वह कृतार्थ है। कृष्णभावनाभावित पुरुष को किसी भी वस्तु का अभाव नहीं रहता, श्रीकृष्ण स्वयं उसके योगक्षेम का वहन करते हैं अर्थात् उसकी लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इसलिए भक्त का स्वरूप उस सागर के सदृश है, जो सदा अपने में ही पूर्ण रहता है। सागर में सरिताजल के प्रवाह के समान उसे विषयों की प्राप्ति हो सकती है, परन्तु वह भक्तिरूप स्वधर्म में निष्ठ रहता है, इन्द्रियतृप्ति-विषयक मनोरथों से बिल्कुल भी अशान्त नहीं होता। यह कृष्णभक्त की कसौटी है—कामना के होते हुए भी वह इन्द्रियतृप्ति में कभी प्रवृत्त नहीं होता। वह भक्तियोग से पूर्ण सन्तोष प्राप्त कर लेता है, इसलिए सागर के समान अचल रहकर पूर्ण शान्ति का आस्वादन कर सकता है। दूसरी ओर, लौकिक कार्यों के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या, जो मनुष्य मोक्ष-साधन तक इन्द्रियतृप्ति की इच्छा से करते हैं, वे कभी शान्ति-लाभ नहीं कर सकते। कर्मी, मुमुक्षु, सिद्धिकामी योगी, आदि सभी अपूर्ण कामनाओं के कारण सदा अशान्त रहते हैं। परन्तु कृष्णभक्त श्रीकृष्ण की अनन्य सेवा में प्रसन्न रहता है, उसकी कोई अन्य कामना नहीं होती। वह तो भवबन्धन से मोक्ष भी नहीं चाहता। अस्तु, सब प्रकार की विषयवासना से सर्वथा मुक्त होने के कारण कृष्णभक्त ही पूर्ण शान्त हैं।

27.2

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति।।७१।।

विहाय=त्यागकर; **कामान्**=इन्द्रियतृप्ति की सम्पूर्ण कामना को; **यः**=जो; **सर्वान्**=सब; **पुमान्**=पुरुष; **चरति**=जीवन-यापन करता है; **निःस्पृहः**=इच्छाशून्य; **निर्ममः**=ममता से रहित; **निरहंकारः**=मिथ्या अहंकार से मुक्त; **सः**=वह; **शान्तिम्**=पूर्ण शान्ति को; **अधिगच्छति**=प्राप्त होता है।